# Download CBSE Board Class 12 Hindi Core Topper Answer Sheet 2018 For Free

Think90plus.com

## खण्ड-ग

(8)

### उत्तर - 8

(क)

प्रस्तुत पंक्तियाँ "दिन जल्दी-जल्दी ढलता है" कविता की है। इन पंक्तियों में श्री हरिवंशराय बच्चन जी ने पक्षियों के बच्चों की बात की है। उनके अनुसार ये बच्चे अपने संरक्षकों का इंतजार कर रहे है, इसीलिए वह नीड़ो से झाँक रहे है। 2

(ख)

चिड़िया अपने बच्चों के बारे में विचार करते हुए की वह उनकी प्रतीक्षा कर रहे है सोच कर जल्दी घर पहुचने का प्रयास करती है, उनके बच्चे खाने की आशा में उनका इंतजार कर रहे होगें, वही कवि के अनुसार उसका कोई भी नहीं है जिसके कारण उसके कदम शिथिल हो जाते है।

2

4

(ग)

कवि स्वंय से यह प्रश्न करता है कि उसको मिलने को कौन चिंतित होगा? और वह किससे मिलने को चंचल हो?। सही अर्थों में कवि के अनुसार उनका कोई नहीं है। वह समाज में अकेले है। अतः उनके कदम शिथिल हो जाते है।

2

(घ)

"दिन जल्दी-जल्दी ढलता है" कथन कवि ने समय के तेजी से बीत जाने का वर्णन किया है। कवि के अनुसार तेजी से संरक्षक अपने बच्चों के पास पहुंचने का प्रयास करते है, वही कवि के साथ कोई भी नहीं है। इसी प्रकार जीवन रूपी नाव में भी सबको अकेले ही घुमना पड़ता है व एक दिन यह दिन ढल जाता है वह जिंदगी समाप्त हो जाती है। जल्दी-जल्दी में कवि ने पुनरुक्ति प्रकाश का प्रयोग

किया है।

2

उत्तर 1

6

(क)

किया है।

(i) कवि ने सरल भाषा का प्रयोग किया है।
(ii) भाषा सहज है।
(iii) ~~तत्समनिष्ठ~~ खड़ी बोली का प्रयोग किया है तत्समनिष्ठ है।
(iv) प्रस्तुत पंक्तियों में देशज भाषा का भी प्रयोग किया गया है।
उदाहरण → "लोका देना"
(v) माँ ने बच्चे की तुलना चाँद के टुकड़े से की है।
(vi) खिलखिलाते बच्चे की हँसी में 'श्रव्य बिंब' है।
(vii) प्रस्तुत पंक्तियाँ रुबाईयाँ से ली गयी है इसमे पहली, दूसरी व चौथी पंक्ति मे तुक बैठता है व ~~(स्वक)~~ तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है।

2

(ख)

भाव सौंदर्य → प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने माँ का अपने बच्चे के प्रति स्नेह को व्यक्त किया है। माँ अपने

6

चाँद के टुकड़े को आँगन में लिए खड़ी है, वह उसे झुला रही है, बीच-बीच में वह उसे हवा में उछाल देती है जिससे बच्चा बहुत खुशी से हँसने ~~लगता~~ लगता है।
अतः इसमें माँ का बच्चे के प्रति स्नेह को वर्णित किया है।

2

(ग)

(क) माँ का बच्चे के प्रति स्नेह का चित्रण है अतः ~~स्वभावक~~ स्वभावोक्ति ~~स्वभावक्ति~~ ~~अ~~ स्वभाव्योक्ति अलंकार है।
(ख) रह-रह में पुनरुक्ति प्रकाश है।
(ग) बच्चे को चाँद के टुकड़े की संज्ञा दी गयी है।
(घ) बिंबात्मक रचना है।
(ङ) माँ के लिए गोद-भरी शब्द का प्रयोग किया गया है।

2

6

10

(क) कुँवर नारायण के अनुसार जिस प्रकार बच्चे भेद-भाव से रहित रहते हैं। उनके अनुसार देश, जाति, धर्म, लिंग आदि में कोई अंतर नहीं रहता है। उनके लिए सभी घर समान होते हैं, उसी प्रकार कविता भी घर-घर में घुमती हैं व अपने विचार सभी को फैलाती हैं। कवि के अनुसार कविता भी सबको समान मानती हैं। वह हर किसी समान रूप में शिक्षा देती हैं।
अतः इसीलिए कवि के अनुसार कविता की उड़ान असीमित होती हैं। वह बिना मुरझाए महकती हैं तथा हर व्यक्ति को समान मानती हैं। 3

(ख)

(ग) संभवतः यह देखा गया हैं कि कवियों को समाज से कोई मतलब नहीं रहता, परंतु तुलसीदास जी के साथ ऐसा नहीं हैं। वह अपने समाज की आर्थिक विषमताओं की अच्छी समझ हैं। उनके अनुसार किसान के पास खेती नहीं हैं, भिखारी को कोई भीख नहीं देता, व्यापारी के पास व्यापार करने

के लिए रुपये नहीं हैं। अलग-अलग साधन के लोगों के पास अपनी जीविका को चलाने के लिए उपयुक्त साधन नहीं हैं, अतः वह सब जीविकाविहीन हो गये हैं। वही एक छंद में तुलसीदास जी ने कहा है कि पेट की आग समुद्र से भी बड़ी है अतः इसको शांत करने के लिए लोग ऊँचे-नीचे कर्म, धर्म-अधर्म व अपने बेटा-बेटी को बेच देते हैं, यह उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि तुलसीदास जी को समाज की आर्थिक विषमताओं की अच्छी समझ थी।

## 11

(क) = लेखक जैनेंद्र कुमार के अनुसार बाजार एक मायाजाल है, यह एक जादू की तरह है। 'बाजार में एक जादू है' का अर्थ है कि बाजार लोगों को अपने मायाजाल में फँसाता है। यह अपने रूप, रंग, आकार से लोगों का मन मोह लेता है।
यह जादू तब काम करता है जब जेब भरी व मन खाली होता है। जेब भरी पर मन भरा न हो तब

भी यह जादू खूब असर करता है। 2

(ख) इस जादू की मर्यादा यह है कि मनुष्य अपने लोभ व इच्छा के आगे झुक जाता है। जेब भरी हो और मन खाली हो तो यह जादू बहुत चलता है। अतः यह आवश्यक रहता है कि बाजार जाते वक्त मन भरा रहना चाहिए। जिस प्रकार लू में पानी पीकर जाने से लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। इसी प्रकार बाजार जाए तो मन भरा रहना चाहिए। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि मन शून्य हो जाए। 2

(ग) मन खाली होने का अर्थ है मन में विचार न होना। अर्थात मनुष्य अपनी आवश्यकता की चीज न होते हुए भी खरीद लेगा। वह अनावश्यक चीजे खरीद लेता है। इसके परिणाम स्वरूप समय आने पर उसे पछतावा होता है। क्योंकि खाली मन से अनेक चीजें उसे आकर्षित करती हैं और वह उस गहरे जाल में फँस जाता है।
और आखिरी में अपना सिर पीटता है। 2

(घ) जब मनुष्य अनावश्यक चीजों को खरीद कर सभी सामान को

जरूरी मानने लग जाता है व आखिरी पछताता है
तब जादू का असर दिखाई देता है।
मन पर जादू का असर तब चढ़ता है जब मनुष्य
अनावश्यक चीजों को खरीदता है। इससे वह मायाजाल में
फँसता चला जाता है, व स्वभाव से आलसी बन जाता
है।

12. (ख) जीजी के अनुसार त्याग भावना से दिया गया ही दान
फलीभूत होता है। वह इसे अंधविश्वास नहीं मानती थी।
उनका मानना था कि भगवान भी यही चाहते हैं।
दान का शास्त्रों में बहुत महत्व बताया गया है। उनके
अनुसार अगर अमीर दो-चार रुपये दान दे तो वह
दान नहीं कहलायेगा। दान वह होता है जिस चीज की
हमारे पास कमी है व हमें उसकी जरुरत हो वह देना।
किसान भी जब 50-60 टन खेती करता है तो वह 5-6
सेर अनाज फेंक देता है। इसी प्रकार पानी के दान
देने से इंद्र देवता प्रसन्न होंगे व वर्षा करेंगे।
परंतु लेखक इन्हें अंधविश्वास मानता है।

(ग) पहलवान की ढोलक मृतक गाँव के लिए संजीवीनी का कार्य करती थी। वह बीमार हुए लोगों की नसों मे स्फूर्ति भर देती थी। मरते हुए लोगों को आँखे मूँदने मे तकलीफ भी नहीं होती है। वह लोगो के अंदर उत्साह भर देती थी। लोगों के सामने कुश्ती का दृश्य आ जाता था जो इन्हें आत्मविश्वास से भर देता था। पूरे गाँव में यह संजीवीनी की तरह रात्रि की विभीषिका को शांत करने का कार्य करती थी।

3

(घ) चार्ली चैप्लिन का जीवन बड़े कष्टों से बीता, उनकी माँ परित्यक्ता ~~थी~~ व दूसरे दर्जे की स्टेज अभिनेत्री थी, माँ की मृत्यु का उनका पालन-पोषण उनकी नानी ने किया, उनकी नानी खानाबदोश थी, ~~उस~~ उनका जीवन सामाजिक्त सामंतसाही, ~~पूंजीवाद~~ पूंजीवाद से मगरूर था जिसने इन्हे घुमंतु चरित्र का बना दिया था। इसके बावजूद जीवन में अत्यंत संघर्ष झेले जिसके कारण चार्ली ने अमीर होकर भी जीवन के मूलतत्व नहीं खोने दिये।

अतः जीवन को अत्याधिक विषमताओं से झेलने के बाद चाली ने कभी भी अहं की हावी नहीं होने दिया। उन्होंने खुद पर हँसने का प्रचलन बनाया।

(ङ) 'नमक' कहानी की मूल संवेदना है कि देश मानचित्र पर लकीर खींचने से ही देश अलग नहीं होते, पाठ में सफिया, सिख बीबी, कस्टम आधिकारी, सुनीलदास गुप्ता आदि को देखकर यह पता चलता है, मानचित्र पर लकीर खींचने से मनुष्य की भावनाएँ नहीं नष्ट करी जा सकती है। सिख बीबी लाहौर को अपना वतन बताती है व वहाँ से लाहौरी नमक लाने की सौगात करती है। पकिस्तानी कस्टम आधिकारी अपना वतन दिल्ली बताते है व जामा मस्जिद की सीढ़ियो पर सलाम करने को कहता है। भारतीय कस्टम आधिकारी सुनीलदास गुप्ता कि ढाका को अपना वतन बताते है।
अतः इस इन सभी उदाहरणों से नमक पाठ की मूल संवेदना प्रकट होती है।

13

5

भूषण का अपने पिताजी को सिल्वर-वैडिंग पर ऊनी ड्रेसिंग गाऊन देना यशोधर पंत जी के मन में अभाव पैदा करता है। उनका मानना है कि उनके बच्चे उन्हें यह नहीं कह रहे कि दूध में ला दूंगा। उनका मानना है कि भले बच्चे कितने बड़े क्यों न हो गए हो परंतु उनमे मौलिक संस्कारों की आज भी कमी कमी है। आधुनिकता की इस दौर पर वह अपने पिताजी को मदद का आश्वासन देने के बजाए गाऊन देता जो कि उन्हें फटा पैंजामा पहन कर ना जाना पड़े।
भूषण के द्वारा दिया गया गाऊन यशोधन जी के मन में अराजकता का भाव पैदा करती है। उनका मानना है कि शायद सारी दुनिया जो हुआ होगा ही मैं जीती है।

बुजुर्ग पीढ़ी हमसे कुछ आस अपेक्षा करती है। वह चाहती है कि हम संकट की परिस्थितियों में उनकी सहायता करें। उनके कार्य को अपना कार्य समझे, उनकी देखभाल करें। उनके साथ रहें। वह चाहती है कि हम

पत्र - लिखकर उनकी मदद करें। अपने जीवन को सहजता से जिए परंतु आज की पीढ़ी ऐसा कुछ नही करती। इनके अंदर की मानवीय संवेदनाये नष्ट हो रही है,

भूषण के द्वारा ~~पिता~~ पिताजी को दिया गया गाऊन यही मनोदशा दिखलाता है कि हमारे अंदर अभाव ~~बढ़~~ बढ़ रहे है। व अपनों की मदद के लिए हम कामचोरी कर रहे है।

यशोधर बाबू अपने बच्चों से इतना चाहते थे कि वह भी उनका काम में हाथ बटाए परंतु उनके बच्चों को ऐसा कुछ पसंद नहीं था।

आधुनिकता के दौर पर हम मानवीय मूल्य खोते जा रहे है अतः आवश्यकता इन्हे अपनाने व बडो का आदर करने की क्योंकि वह हमारा भला ही चाहते है।

10

•14

क) मेरे विचार से लेखक की पढ़ाई के प्रति दत्ता जी राव का रवैया सही न ही लेखक के पिता का। दत्ता जी राव पढ़ाई का महत्व समझते थे व लेखक व उसकी माँ से बात करने के बाद उन्हें आश्वासन देती हैं कि लेखक पढ़ पायेगा। वही लेखक के पिता लेखक को पढ़ना व्यर्थ समझते हैं।

लेखक के पिता के अनुसार लेखक को खेती में मन लगाना चाहिए। वह लेखक से सारा काम करवाना चाहते थे व खुद आराम करना चाहते थे किंतु लेखक को पढ़ना था। वह दत्ताजी राव से बात करने के बाद भी लेखक के सामने शर्त रखते हैं कि सुबह वह खेत का काम करके स्कूल जायेगा व फिर स्कूल से आकर खेत का कार्य करेगा और जरूरत पड़ने पर छुट्टी करेगा। इससे पता चलता है कि उनका रवैया सही नहीं है।

दत्ता जी राव के मतानुसार पढ़ना आवश्यक है। वहलेखक के पिता को डाँटते हैं और उसे स्कूल भेजने को

कहते हैं। और यह भी कहते हैं कि तुझसे नहीं होगा तो मैं खर्चा उठाऊँगा। वह लेखक को भी समझाते हैं कि उसको पढ़ाई में लगाकर करनी होगी।

अतः वह लेखक को हर हालत में पढ़कर नाम कमाने के बारे में जान कराते हैं। अगर दत्ताजीराव न होते तो लेखक कभी पढ़ न पाता और उसके पिता उसे खेती में ही लगाए रखते।

अतः पढाई-लिखाई के संबंध में दत्ता जी राव सचेत थे। उन्होंने लेखक की मदद की जो कि पढ़ सके। अतः लेखक ने भी खूब मेहनत की व वह सफल रहा।

(ख)

लेखक ओम थानवी ने जब सिंधु-घाटी सभ्यता के दो शहरों में यात्रा की तो उन्होंने पाया की सिंधु सभ्यता साधन - संपन्न व इसमें कृत्रिमता एवं आडंबर नहीं थे।
पुरातत्व विज्ञ वैज्ञानिकों की माने तो यहाँ के अजायबघर का समान आज भी शोभा बढ़ा रहे हैं। जब वह यात्रा के दौरान एक अजायबघर में गए थे तो उन्होंने देखा कि यहाँ भौंजार तो हैं परंतु हथियार नहीं हैं। जैसे हर राजा के पास हथियार की बड़ी खेप होती थी परंतु यहाँ हथियार नहीं है। इसके मतानुसार सिंधु सभ्यता राजतंत्र व धर्मतंत्र के न बल पर अनुशासित सभ्यता थी। लोग मूलतः पशुपालन व खेती करते थे। यहाँ से मिले बर्तन, मृद् भांड़े आदि को देखकर पता लगाया जा सकता की यहाँ के लोगों को कला में खास रुचि थी। यहाँ लोकतंत्र राजसत्ता के बल पर नहीं थी। जैसे राजा के पास हथियारों की बड़ी खेप होती है सिंधु

घाटी सभ्यता में ऐसा कुछ भी नही है, यहाँ छोटी नावें मिली है व मिस्त्र में बड़ी नावों का प्रचलन है, यह का सामान चित्र, बर्तन आदि इसकी कहानियाँ बताते है, मंदिर, महल आदि थे परंतु वह समय के साथ हो गए। यहाँ पानी निकासी की बहुत अच्छी व्यवस्था थी।
यहाँ एक बैलगाड़ी भी मिली है जो उस समय के महानतम आविष्कारो में से एक है।
यहाँ से मिला सूती कपड़ा हजारों साल पहले की कहानी कहता है। सूइयाँ व तरह-तरह के औजार यहाँ पाये गए है। परंतु हथियार का नामोनिश नही है, यहाँ एक महाकुंड भी है।
अतः यह सभी प्रमाण बताते है कि वहाँ के लोग अनुशासित थे और यह अनुशासन सत्ता बल के द्वारा नहीं था।

अतः सिंधु घाटी सभ्यता साधन संपन्न थी। पर इस सभ्यता का आडंबर नहीं था।

## खण्ड- क

15

1.

(क) भाषा व्यवसायी का अर्थ है भाषा को व्यवसाय बनाना। आजकल के राजनीतिक भाषा को व्यवसास (धंधा) बना चुके हैं। वह भाषा के नाम नाम पर व्यवसाय कर रहे हैं, उनकी पोल तक खुलती है जब भाषा के बिरोध होना शुरू हो जाता है।

2

(ख) संघ एक कार्य प्रणाली का आभिन्न अंग है, यह सुनिश्चित करती है देश के कार्य प्रणाली अुच्छेद से ~~है~~ चलें। संघ का यह कर्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करें, जिससे वह भारत की समाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की आभिव्यक्ति करें। व ~~सभी~~ ~~सवंधे~~ संविधान में लिखे ~~अनुच्छेद~~ अनुच्छेद 351 के अंतर्गत कर्तव्यो का पालन करें।

2

(ग) हिंदी हमारी राजभाषा है। हमें इसका प्रयोग अधिक से अधिक मात्रा में करना चाहिए क्योंकि यह अपना वर्चस्व खोते जा रही है। जिस भाषा से हम जाने जाते है उस भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। 2

(घ) भाषा विविधताओं का देश है। अन्य भाषाओं से लेखक का तात्पर्य विभिन्न राज्यों बोली जाने वाली भाषाओं से है। यहाँ उनका उल्लेख उनकी शैली, रूप को बढ़ावा देने को हुआ है। 2

(ङ) अंग्रेजी भाषा की मानसिकता का तात्पर्य उसके बढ़ते प्रचलन से है लोग हिंदी को भूलते जा रहे है। इससे हमारी अपनी भाषा की अस्मिता आस्मिता व भविष्य संकट मे है। 2

(च) हमारी युवा पीढ़ी अंग्रेजी भाषा की ओर आकर्षित हो रही है व हमारी भाषाकी अपनी आस्मिता और भविष्य संकट में है। शिक्षा, व्यापार,

व्यवहार, आदि किसी भी प्रक्रिया में हमारी भाषा को वर्चस्व नहीं मिल पा रहा है।

2

(छ) इसका अर्थ भाषा को बढ़ावा देने से है, उसकी समृद्धि से है। यह तभी सम्भव हो सकता है जब हम हर क्षेत्र में हिंदी व प्रादेशिक भाषाओं का उपयोग करें। जिससे उसकी अस्मिता बनी रहे।

2

(ज) (i) हिंदी व प्रादेशिक भाषाओं का भविष्य
(ii) ~~अवसायी राजभाषा~~ मातृभाषा का व्यवसाय.

1

---

5

2.

(क) जब वीर क्षमा माँगते हैं तो यह कलंक बन जाती है और जब क्षमता क्षमा ~~जब~~ शूरवीरों की शृंगार है।

1

~~(ख) प्रतिरोध अर्थात किसी के खिलाफ जाना~~ ।

(ख) प्रतिशोध से शौर्य की शिखाएँ दीप्त होती हैं। वह हीन नरों में महापाप। यह तब आवश्यक जब मनुष्य को अपने अपमान के खिलाफ आवाज उठानी है।

(ग) सहिष्णुता को विभूषण और अभिशाप इसलिए कहा गया है क्योंकि यह शूर व न हार दोनों को अभिव्यक्त करती। हारती हुई जाति के लिए सहिष्णुता अभिशाप है।

(घ) लोभ का युद्ध धर्म को ~~विरु~~ विरुद्ध माना गया है, यह क्षात्र धर्म के विरुद्ध है।

(ङ) इसका अर्थ है की ~~पुरु~~ पौरुष जब मनुष्य में जाग्रत होता है तो वह धर्मयुद्ध कहलाता है। इससे मनुष्य के अंदर का प्रतिशोध प्रबुद्ध हो जाता है।

## खण्ड - ख

5

प्र० 6

(क) इस पत्रकारिता में फैशन, अमीरों की पार्टियाँ व, अमीर लोगों की आम जिंदगियों, ~~कै~~ और फिल्मी ~~गपशप~~ गपशप जैसी खबरे प्रकाशित होती है, यह अकसर पेज-थ्री में प्रकाशित होती है ।

1

(ख) समाचार पत्र में निश्चित मानदेय पर काम करने वाले रिपोर्टर ।

1

(ग). इसमे खबरों की गहन शोध, छानबीन, विश्लेषण किया जाता है व उन्हे प्रकाशित किया जाता है ।

1

(घ) संवाददाताओं का काम में विभाजन उनकी रुचि के अनुसार बीट कहलाती है। उदाहरण - खेल, व्यापार आदि

2

(ङ) (i) निरक्षरों के लिए यह उपयोगी है,
(ii) इसमें वाक्य छोटे व सरल होते हैं,
(iii) इच्छ इसे आसानी से समझा जा सकता है।

उ.

(निबंध)

## विकास के लिए शिक्षा आवश्यक

भारत विविधताओं में एकता का देश है। आज हमारा देश हर क्षेत्र में प्रगति कर रहा है व आसमान की ऊचाइयो को छू रहा है। परंतु विकास के लिए सबसे उपयोगी शिक्षा है। कहा भी जाता है कि "शिक्षा का बिना व्यक्ति मृतक समान है।"

आधुनिकता की बात करें तो भले ही हमारा देश आगे है परंतु आकड़े बताते है कि हमारे देश मे केवल 74.04% (प्रतिशत) लोग शिक्षित व जिनमें महिलाओं की संख्या 65.46% (प्रतिशत) है। हम अपने आप को आधुनिक बताते परंतु आज भी हमारे देश में कई राज्य विकास के दर में पीछे है कारण है अशिक्षित होना। हमारी युवा पीढ़ी

बेरोजगार है।
देश के कई राज्य बिहार, ओडिसा, मध्यप्रदेश इसीलिए पीछे है क्योंकि यहँ केवल 60-65% (प्रतिशत) लोग ही शिक्षित है। भारत एक ~~उच्च~~ बड़ा देश जो विभिन्न प्रकार की वेश-भूषाओं से प्रसिद्ध है। परंतु इन आंकड़ो को देखकर हैरानी है।
देश का विकास विज्ञान, खेल, राजनीति से ही नहीं होता इसमे जरूरत है ज्यादा से ज्यादा लोगों की शिक्षित करने की। केरल आज भारत में विकास के दौड़ सबसे आगे है क्योंकि वहाँ 93.91% (प्रतिशत) लोग शिक्षित है। अतः शिक्षा के बिना मनुष्या निरी पशु समान है।
देश अगर शिक्षित होगा तभी हमारा ~~विक~~ विकास होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा संचालित 'बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ' लड़कियों को अवसर देने की एक सुलभ मुहीम है।
आखिरकार एक लड़की पढ़ती है तो वह दो घरों का विकास करती है। वर्तमान में कई ऐसे अभियान चल रहे है परंतु जरूरत है इन्हे मूलतः

व्यवहार मे लाने की।
अतः अगर देश को ऊचाइयों तक पहुँचाना है तो आवश्यक है कि देश के नागरिक शिक्षित हो।

---

5

5. (आलेख)

गाँव से मजूदरों का पलायन

गाँव से अकसर भारत में ~~कक~~ बढ़ती आबादी के लोग शहर आते है जो कि वह अपना जीवनयापन अच्छे कर सके। ~~भार~~ भारत में करीब 68% प्रतिशत लोग गाँव से शहर आते है।
शहर कई साधनों भरा पूरा रहता है। इन साधन में पढ़ाई, रोजगार प्राप्ति के अवसर प्रमुख है। मजदुर गाँवो से शहर में अपनी ~~जीवीनिका~~ जीवनयापन के लिए आते है। शहर के चकाचौंध उन्हे प्रभावित करती है।

कई बार नियमित रूप से अवसर न मिलने की वजह से इन लोगों को अनेक यातनाओं को सहना पड़ता है। मूलतः यह लोग झुग्गी - झोपडी मे रहते है व काम अपने इच्छानुसार नहीं कर पाते है। इनकी झोपड़ियाँ नालों के पास ~~स्थित~~ होती है जिससे इन्हें अनेक प्रकार की बीमारियों को झेलना पड़ता। यह लोग अनपढ़ इसलिए इनका शोषण भी किया जाता है।

अकसर कहा जाता है कि शहर की जिंदगी बढ़िया होती परंतु इन लोगों अनेक प्रकार के कष्टों को झेलना पड़ता है। गाँवो से ~~मजदू~~ मजदूरों का पलायन बढ़ता जा रहा है जो ~~सन~~ सम्भवतः व शहरों की जनसंख्या बढ़ा रहा है। मजूदरों का पलायन उनको कष्ट से भरी ~~जिंदगियों~~ जिंदगी देती है। हर साल भारत का बहुत बड़ा वर्ग पलायन करता है और इन समस्याओं को झेलता है।

अतः महानगरो ~~मे~~में पलायन गाँव के मजुदूरों द्वारा हर स्थिति लोगों को मायाजाल में फँसा रहा है।

सभवतः जरूरत है लोगो के लिए ज्यादा से ज्याद आवास निर्माण करने की जो सस्त भी रहे व लोगो की जरूरते पूरी कर सके।

## महानगरों में आवास की समस्या

देश के प्रमुख महानगर दिल्ली, कलकत्ता, चेन्नई, मुंबई माने जाते है, परंतु यहाँ आवास की समस्या प्रमुख है। लोगों को रहने के लिए आवास नही मिलते। इसका मुख्य कारण बढती जनसंख्या है। विभिन्न छोटे शहरो से महानगरो मे अपनी जीविका चलाने के लिए आते है जिससे इन्हे रोजगार मिले परंतु इन्हें यहाँ आवास ही नहीं मिलते।

ऐसा कहा जाता है कि भारत के 31.16 % प्रतिशत लोग शहरो मे रहते है। आबादी मे से मुख्यतः महानगरो मे रहने वालो की समस्या बहुत अधिक है।

इस कारण मुख्यतः लोग झुग्गी - झोपड़ी में रहना शुरु कर देते हैं। मुंबई का "धारावी" इसी का उदाहरण है यहाँ 1450 लोगों के लिए एक शौचालय यहाँ समस्या बढ़ती जा रही है। लोगों को आवास ने मिलने के कारण कई लोग सड़क में रहते हैं।

महानगरों में आवास की समस्या हाल ही कुछ सालों में बढ़ गई है, आवश्यकता है इसे सुलझाने की क्योंकि भारत की अधिकतर लोग इन्हीं में रहा करते हैं।

भले ही यह अनेक प्रकार के साधनों से निर्मित है परंतु लोगो को आवास न मिलना समभवः सबसे बड़ी मुख्य समस्या।
इसका निवारण होना आवश्यक क्योंकि कई लड़कियों के लिए इन महानगरो में रहना मुश्किल हो गया है।

परिक्षा भवन
हरिद्वार

02.04.2018

प्रति
निदेशक महोदय,
दूरदर्शन केन्द्र
दहरादून

विषय - नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करना।

महोदय,

सविनय निवेदन इस प्रकार है कि मैं आपके दूरदर्शन केन्द्र के माध्यम से नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करने का

आग्रह करना चाहती हूँ।
भावी पीढ़ी युवा पीढ़ी है। दूरदर्शन कोई भी संदेश देने का सबसे उचित माध्यम है। अगर आपके दूरदर्शन के माध्यम से नवीन साहित्यिक साहित्यिक रचनाओं का प्रकाश किया जाए तो उनके जीवन में इसका बहुत अच्छा फल मिलेगा।
बच्चे इन्हें देखकर सीखेंगे के अपने आप को इनके अनुसार जीवन का आपन करेंगे।
वह मानवीय मूल्य सीखेंगे जो उनके जीवन में सदा बने रहेंगे।
अतः आपका दूरदर्शन ~~केन्द्र~~ केंद्र अगर आज के युवाओं को प्रोत्साहित करने का प्रमुख माध्यम हो सकता है तो इससे देश को लाभ होगा।
इन रचनाओं का कार्यक्रम देखकर युवा खुद इत्तेजित लिखने के लिए। उनके सोचने को देखना बढ़ेगा।
हमारे युवा आगे बढ़ेंगे तो हमे सबसे ज्यादा खुशी होगी।
अतः आशा करती हूँ कि आप मेरे विचारों

32

के बारे मे विचार करेगें व अपने केन्द्र में नवीन साहित्यिक रचनाओं के कार्यक्रम प्रकाशित करेगें।
आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद,
भवदीया,
क० ख० ग०
परीक्षा भवन
हरिद्वार

5

2018

100/100

100/100

100/100

100/100